STUDY IQ PUBLICATIONS

SIP+

SUCCESS IN PRELIMS

- प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विस्तृत विषय-सामग्री
- मानक पुस्तकों एवं NCERT का सार
- चार्ट, सारणी एवं आरेख द्वारा सारांशित
- सहज अनुस्मरणीय

अर्थव्यवस्था

रिविज़न हेतु सहज एवं सरल

यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु उपयोगी

भारतीय अर्थव्यवस्था

रिवीज़न हेतु सहज एवं सरल

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए उपयोगी

Study IQ Education Pvt. Ltd.
भारत की अर्थव्यवस्था: रिवीज़न हेतु सहज एवं सरल 1st Edition by Study IQ Publications
Author/Copyright Owner: Study IQ Education Pvt. Ltd.
© Copyright is reserved by Study IQ Education Pvt. Ltd.
Publisher: Study IQ Publications

Printed at: ATOP Printers, Noida

इस पुस्तक के सभी अधिकार सुरक्षित है। सामान्य रूप से पाठ का कोई भाग, आंकड़ा, चित्र, पृष्ठ लेआउट और पुस्तक कवर डिजाइन विशेष तौर पर किसी भी रूप या किसी भी माध्यम जैसे इलैक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकोर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनप्राप्ति प्रणाली द्वारा प्रकाशक या लेखक की पूर्व अनुमिति के बिना प्रस्तुत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

इसका प्रकाशन सभी प्रारूपों में, अर्थात पेपरबैक, ई-बुक, या किंडल ईबुक के माध्यम से, इस शर्त के अधीन बेचा जा सकता है कि इस पुस्तक को प्रकाशक या लेखक की पूर्व अनुमिति के बिना व्यापार के माध्यम से या अन्यथा, उधार, पुनर्विक्रय, फोटोकॉपी, किराए या अन्य तरीकों से प्रसारित नहीं किया जाएगा।

इसके प्रकाशन/पुस्तक/ईबुक/किंडल ईबुक में निहित जानकारी Study IQ (स्टडी आईक्यू) की संपादकीय टीम के सामूहिक प्रयासों का नतीजा है। ऐसा विश्वास है कि इसमें शामिल सभी जानकारी सटीक और विश्वसनीय है। इस पुस्तक में जानकारी का स्रोत सहयोगियों से प्राप्त है। जिनके अनुभवी कार्यों और मुद्रांकन का इस्तेमाल करने से पहले जांच की जाती है। फिर भी, न तो Study IQ और न ही संपादकीय टीम इस प्रकाशन में प्रदान की गई जानकारी की सत्यता की गारंटी देती है। इस जानकारी के इस्तेमाल से होने वाली किसी भी हानि के लिए ये जिम्मेदार नहीं होगें।

प्रस्तावना

प्रिय अभ्यर्थियों,

सिविल सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा जल्द ही आयोजित होने वाली है। इस परीक्षा को सिविल सेवक बनने के आपके लक्ष्य की दिशा में पहला पड़ाव माना जाता है। प्रारम्भिक परीक्षा, यूपीएससी सीएसई का सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी चरण है, और इसलिए, इसमें सफल होने के लिए निरंतर अध्ययन, रिवीजन और परीक्षण करना अनिवार्य है। वर्तमान प्रतियोगिता के दौर में यूपीएससी की प्रारम्भिक परीक्षा का प्रयास करने वाले 100 अभ्यर्थियों में से सामान्यत: केवल 1 अभ्यर्थी ही इसमें सफल हो पाता है। बढ़ती प्रतिस्पर्धा को देखते हुए, इसमें सफल होने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई अध्ययन सामग्री की नितांत आवश्यकता है। सरल अध्ययन सामग्री वर्तमान समय की मांग है जो यूपीएससी पाठ्यक्रम के त्वरित एवं प्रभावी तरीके से रिवीजन में मदद करती हो।

हमारी यूपीएससी सीएसई पुस्तकों के लिए अभ्यर्थियों द्वारा प्राप्त उत्साहजनक प्रतिक्रिया से प्रेरणा लेते हुए, हम प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी को सरल बनाने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ रहे हैं। अभ्यर्थियों की मांग को पूरा करने के लिए, स्टडी आईक्यू प्रकाशन आपको 'एसआईपी + स्टेटिक रिवीजन सिम्पलीफाइड बुकलेट्स' के पहले संस्करण को प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है।

एसआईपी + पुस्तिका श्रृंखला को रणनीतिक रूप से 2 भागों में विभाजित किया गया है; एसआईपी + स्टेटिक रिवीजन सिम्पलीफाइड और एसआईपी + करंट रिवीजन सिम्पलीफाइड। यूपीएससी का पाठ्यक्रम व्यापक है, जो सूचनाओं की अधिकता और प्रश्नों की जटिलता के कारण और भी कठिन हो जाता है। ये पुस्तिकाएं विशेष रूप से उन समस्याओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं, जिनका सामना अभ्यर्थियों को उनकी प्रारंभिक तैयारी के दौरान करना पड़ता है। यह अभ्यर्थियों से संबंधित आवश्यक मुद्दों को सुलझाने और प्रारम्भिक परीक्षा से पहले उनके अमूल्य समय को बचाने का एक सार्थक प्रयास है।

पुस्तिका की प्रमुख विशेषताएं:

- यूपीएससी के वर्तमान रुझानों एवं पैटर्न के अनुरूप, अद्यतन पाठ्यसामग्री, रिवीजन के लिए उपयुक्तता के जरिए इस पुस्तिका का उद्देश्य आपकी तैयारी को सटीक और प्रासंगिक बनाना है।
- यूपीएससी प्रारम्भिक परीक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति इसका केंद्रबिंदु है।
- हमने यह सुनिश्चित किया है कि पाठ्यसामग्री सुस्पष्ट और रिवीजन के लिए बेहतर हो; ताकि अभ्यर्थी प्रमुख अवधारणाओं और तथ्यों को सीख सकें और उसे याद रख सकें।
- हमने प्रासंगिक अवधारणाओं और तथ्यों को समझने में मदद करने के लिए पुस्तिका में तालिकाओं, चार्ट और माइंड मैप को शामिल किया है।
- एसआईपी+ पुस्तिका की एक प्रमुख विशेषता महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं एवं तथ्यों पर आधारित रिवीजन चार्ट है जिसे छात्र अपनी इच्छानुसार अपनी दीवार या स्टडी टेबल पर लगा सकते हैं।
- StudyIQ टीम पूरी ईमानदारी और विनम्रता के साथ आपको परीक्षा की तैयारी हेतु शुभकामनाएं देती है, और आशा करती है कि यह पुस्तिका आपकी इस यात्रा में महत्वपूर्ण रूप से सहयोगी होगी।

विषय सूची

अध्याय 1 : अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धांत 1

अध्याय 2 : आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास 15

अध्याय 3 : मुद्रा 26

अध्याय 4 : मौद्रिक नीति 50

अध्याय 5 : बजट और लोक ऋण 66

अध्याय 6 : बेरोजगारी 77

अध्याय 7 : बाह्य क्षेत्र 94

अध्याय 8 : मुद्रा स्फीति 109

अध्याय 9 : उद्योग 130

अध्याय 10 : अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान 153

STUDY IQ PUBLICATIONS

अध्याय 1

अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धांत

परिचय

'इकोनॉमिक्स' शब्द यूनानी शब्द 'ओइकोनॉमिकोस' से लिया गया है।

- ओइकोस का अर्थ है, परिवार।
- नेमीन का अर्थ है "प्रबंधन", "प्रथा" अथवा "विधान"।

अत: यहाँ अर्थशास्त्र का अर्थ 'परिवार द्वारा किया गया प्रबंधन कार्य' है।

अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ

वस्तुएँ एवं सेवाएँ

किसी अर्थव्यवस्था में, वस्तुएँ एवं सेवाएँ मानव की आवश्यकताओं को पूर्ण करती हैं। जब तक अन्यथा न कहा जाए, अर्थशास्त्र में 'वस्तु' शब्द में 'सेवा' शब्द भी निहित होता है।

वस्तु एवं सेवा के लक्षण	
वस्तुएँ	**सेवाएँ**
भौतिक वस्तुओं के रूप में, ये मूर्त हैं	ये प्रकृति में अमूर्त है। सेवाएँ गैर-भौतिक वस्तुएँ हैं, जो अन्य वस्तुओं के संबंध में विद्यमान हैं, जैसे कि ब्रांड छवि, साख, इत्यादि
इनके भौतिक आयाम होते हैं	सेवाएँ विभिन्न क्षेत्रों या सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों में भिन्न होती हैं, अर्थात सेवाएँ विषम हैं। उदाहरण के लिए, संगीत, परामर्शदात्री चिकित्सक
अपने स्वामित्व से स्वतंत्र रूप से अस्तित्ववान हैं	सेवाएँ अपने निर्माताओं से अविच्छिन्न रूप से संबद्ध हैं। उदाहरण के लिए, श्रम एवं श्रमिक
ये हस्तांतरणीय हैं तथा इनका विनिमय मूल्य होता है	----------------------------

वस्तुओं के प्रकार (और सेवाएँ)

क्र.सं.	प्रकार	स्पष्टीकरण
1	नि:शुल्क वस्तुएँ	नि:शुल्क वस्तुएँ प्रकृति व बहुतायत में उपलब्ध हैं। मनुष्य को उनका स्वामित्व धारक होने या इनका उपयोग करने हेतु कोई व्यय करने की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए वायु, एवं सूर्य-प्रकाश।
2	आर्थिक वस्तु	आर्थिक वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नहीं होती हैं। इनकी आपूर्ति कम है। मनुष्य को इनका स्वामित्व या उपयोग करने हेतु धन व्यय करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, कार, रेफ्रिजरेटर आदि।
3	सार्वजनिक वस्तुएँ	एक ऐसा वस्तुएँ जो उपभोग हेतु सभी के लिए उपलब्ध हो, भले ही कोई भुगतान करे तथा कोई न करे। उदाहरण के लिए: राष्ट्रीय रक्षा, कानून प्रवर्तन।
4	निजी वस्तुएँ	एक व्यक्ति या परिवार द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तु। उदाहरण के लिए: खाद्य एवं पेय।
5	उपभोक्ता वस्तुएँ	उपभोक्ता वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं, जिन्हें परिवार द्वारा अंतिम उपभोग हेतु क्रय किया जाता है। इनका उपयोग आगामी उत्पादन प्रक्रिया हेतु नहीं किया जाता है। उपभोक्ता वस्तुओं के सामान्य प्रकार इस प्रकार हैं: a) **टिकाऊ वस्तुएँ:** ये वस्तुएँ शीघ्र खराब नहीं होती हैं। टिकाऊ वस्तुओं की जीवन अवधि अधिक होती है तथा कई वर्षों तक बारंबार उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए: टीवी, कार इत्यादि। b) **अर्ध-टिकाऊ वस्तुएँ:** इन वस्तुओं का उपयोग एक वर्ष या उससे थोड़ा अधिक अवधि हेतु किया जा सकता है। उदाहरण के लिए: वस्त्र। c) **गैर-टिकाऊ वस्तुएँ:** ये वस्तुएँ एकल-उपयोग उपभोग की वस्तुएँ हैं। इनकी अल्प जीवनावधि होती है। उदाहरण के लिए: रोटी, फल इत्यादि।

क्र.सं.	प्रकार	स्पष्टीकरण
6	पूंजीगत वस्तुएँ	उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त वस्तुएँ अर्थात उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करना। उदाहरण के लिए: एक कारखाने में प्रयुक्त मशीनें।
7	गिफेन वस्तुएँ	गिफेन वस्तुएँ घटिया वस्तुएँ होती हैं। यह मांग के नियम का अपवाद है अर्थात कीमत में वृद्धि के साथ इसकी मांग में वृद्धि होती है तथा इसके विपरीत है। हीन या घटिया वस्तुएँ वे वस्तुएँ होती हैं, जिनका आय से विपरीत संबंध होता है। आय में वृद्धि ---- अल्प उपभोग। नोट: सभी गिफेन वस्तुएँ घटिया वस्तुएँ हैं, लेकिन सभी घटिया वस्तुएँ गिफेन वस्तुएँ नहीं हैं। उदाहरण के लिए: ऑफ ब्रांडेड केचप
8	वेब्लेन वस्तुएँ	वेब्लेन वस्तुएँ उच्च गुणवत्ता वाली प्रीमियम वस्तुएँ हैं, जिनकी मांग इसकी कीमत के साथ बढ़ता है। यह इन उत्पादों की अनन्य प्रकृति के कारण होता है। उदाहरण के लिए: स्पोर्ट्स कार, महंगी सहायक सामग्री इत्यादि।
9	पूरक वस्तुएँ	वस्तुएँ जो एक साथ उपयोग किया जाता है। उदा: टीवी एवं डीवीडी प्लेयर, पेन व रिफिल इत्यादि
10	हानिकार उपयोगिता वाली वस्तुएँ	जिन वस्तुओं में नकारात्मक बाह्यताएँ होती हैं। जैसे: शराब, सिगरेट इत्यादि।

क्या होता है, यदि सरकार द्वारा जनता को कोई वस्तु नि:शुल्क प्रदान की जाती है?

जब हमारे पास नि:शुल्क में सार्वजनिक सेवाओं का उपयोग करने का अवसर होता है, तो यह सदैव इसके लिए भुगतान करने वाले किसी व्यक्ति की कीमत पर होता है, इसलिए यहां उत्पाद के उपभोक्ताओं से कर-भुगतान करने वाली जनता को अवसर लागत हस्तांतरित की जाती है।

उपादेयता

'उपादेयता' का अर्थ 'उपयोगिता' है। अर्थशास्त्र में, उपादेयता किसी वस्तु या सेवा की "चाह" संतोषजनक अधिकार है।

उपादेयता के लक्षण

विशेषताएँ	उदाहरण
उपादेयता मनोवैज्ञानिक है।	शाकाहारी को माँस से कोई लाभ नहीं होता है।
उपादेयता, उपयोगिता के बराबर नहीं है।	धूम्रपान करने वाले को सिगरेट से संतुष्टि तो मिलती है, लेकिन इसका स्वास्थ्य प्रभावित होता है।
उपादेयता आनंद के समान नहीं है।	रोगी को दवा खाने से लाभ होती है।
उपादेयता मानव आवश्यकता की तीव्रता का कार्य है।	एक व्यक्तिगत उपभोक्ता घटती उपादेयता की प्रवृत्ति का सामना करता है।
उपादेयता एक व्यक्तिपरक अवधारणा है।	सिगरेट से धूम्रपान करने वाले की संतुष्टि को संख्यात्मक रूप से नहीं आंका जा सकता है।
उपादेयता का कोई नैतिक या कर्तव्यपरायण महत्व नहीं है।	एक रसोइया एक चाकू से लाभकारी कार्य करता है, जिससे वह कुछ सब्जियां काटता है; और, एक हत्यारा अपने शत्रु को उस चाकू से वार करना चाहता है।

कीमत

कीमत धन के संदर्भ में बताई गई वस्तुओं का मूल्य है। उदाहरण के लिए: टूथपेस्ट खरीदने हेतु लिया गया धन कीमत है।

लागत

लागत किसी वस्तु की एक विशिष्ट मात्रा के विनिर्माण या अधिग्रहण हेतु किया गया व्यय है।

लागत अवधारणा

अवधारणा	अर्थ
मौद्रिक लागत	उत्पादन लागत को मुद्रा के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है, जिसे मुद्रा लागत कहते हैं। इसमें कच्चे माल की लागत, मजदूरी एवं वेतन का भुगतान आदि सम्मिलित हैं।
वास्तविक लागत	वास्तविक लागत का तात्पर्य उत्पादन में इनकी सेवाओं हेतु सभी कारक स्वामित्वों के प्रयासों की भरपाई के लिए किए गए भुगतान से है।
अवसर लागत	यह अगले सर्वोत्तम वैकल्पिक उपयोगी लागत को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, एक किसान कृषि भूमि में धान एवं गन्ना दोनों की खेती कर सकता है। यदि वह धान की खेती करता है, तो धान उत्पादन की अवसर लागत गन्ना उत्पादन की छोड़ी गई मात्रा है। अवसर लागत को 'वैकल्पिक लागत' या 'स्थानांतरण लागत' भी कहा जाता है।

© Study IQ Publications

अवधारणा	अर्थ
प्रत्यक्ष लागत	प्रत्यक्ष लागत, जिसे अनुरेखणीय योग्य लागत के रूप में भी जाना जाता है, उन व्ययों को संदर्भित करता है, जो एक निश्चित प्रक्रिया या उत्पाद से संबद्ध होते हैं। ये गतिविधि या उत्पाद परिवर्तन के रूप में बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए: उत्पादन से संबंधित विनिर्माण व्यय, बिक्री से संबंधित ग्राहक अधिग्रहण लागत आदि।
परोक्ष लागत	अप्रत्यक्ष लागत, जिसे प्राय: अप्राप्य लागत के रूप में जाना जाता है, ये व्यय होते हैं, जो किसी विशिष्ट कंपनी गतिविधि या घटक से प्रत्यक्षत: संबंधित नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए: विद्युत दरों या आय करों में वृद्धि। हालांकि अप्रत्यक्ष व्ययों को पता करना मुश्किल है, ये महत्वपूर्ण हैं क्योंकि कुल लाभप्रदता पर इनका प्रभाव पड़ता है।
निजी लागत	निजी लागत वे व्यय हैं, जो कंपनी द्वारा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु किए जाते हैं। उद्यमी इनका उपयोग व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक दोनों उद्देश्यों हेतु करते हैं। उदाहरण के लिए: विनिर्माण, उत्पादन, बिक्री एवं विज्ञापन लागत।
सामाजिक लागत	कोई भी समुदाय निजी हितों तथा व्यावसायिक व्ययों की सामाजिक लागत की प्रतिपूर्ति करता है। उदाहरण के लिए: कारखानों द्वारा नदी में अपशिष्ट जल के निर्वहन के कारण जल प्रदूषण।
स्थिर लागत	स्थिर लागत वे हैं, जो उत्पादन की मात्रा को प्रभावित किए बिना स्थिर रहती हैं। ये कंपनी द्वारा इसके उत्पादन की मात्रा को प्रभावित किए बिना व्यय किए जाते हैं। उदाहरण के लिए: किराया, कर एवं ब्याज पर ऋण।
परिवर्तनीय लागत	कंपनी द्वारा उत्पादित उत्पादन की मात्रा के आधार पर परिवर्तनीय लागत में उतार-चढ़ाव होगा। उदाहरण के लिए: कच्चे माल का क्रय तथा वेतन भुगतान जैसे व्यय।
वृद्धिशील लागत	जब कोई निगम कोई नीतिगत निर्णय या नीति परिवर्तन करता है, तो ये लागत वहन की जाती हैं। उदाहरण के लिए: उत्पाद लाइनों में परिवर्तन, नए उपभोक्ताओं का अधिग्रहण, तथा उत्पादन बढ़ाने हेतु वस्तु का अद्यतन सभी वृद्धिशील व्ययों के उदाहरण हैं।
डूबी हुई लागतें (Sunk Cost)	डूबत लागत (Sunk Cost) वे व्यय होते हैं, जो एक उद्यमी पहले ही व्यय कर चुका होता है तथा इसकी प्रतिपूर्ति नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए: विज्ञापन, अनुसंधान तथा मशीनरी अधिग्रहण पर व्यय किया गया धन।

बाजार

अर्थशास्त्र में, बाजार एक ऐसे स्थान को संदर्भित करता है, जहां खरीदार व विक्रेता कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय करते हैं।

राजस्व

राजस्व वस्तु एवं सेवाओं की बिक्री से प्राप्त आय है। कुल प्राप्तियाँ (TR) किसी वस्तु की सभी इकाइयों की बिक्री से प्राप्त धन का प्रतिनिधित्व करता है।

आय

आय राजस्व की वह राशि है, जो एक व्यवसाय अथवा व्यवसायी वस्तुओं एवं सेवाओं की बिक्री से अर्जित करता है। आय उस धन को भी संदर्भित करता है, जो एक व्यक्ति अपने श्रम, सेवाओं या निवेश के प्रतिफल के रूप में प्राप्त करता है।

अनधिमान वक्र

अनधिमान वक्र दो वस्तुओं के संयोजन को दर्शाने वाला एक ग्राफ है, जो उपभोक्ता को समान तुष्टि व उपादेयता प्रदत्त करता है। अनधिमान वक्र पर दर्शित कोई भी संयोजन उपभोक्ता तुष्टि का समान स्तर प्रदत्त करता है। अनधिमान वक्र पर प्रत्येक बिंदु इंगित करता है कि एक उपभोक्ता दोनों के मध्य अनधिमान है तथा सभी बिंदु उसे समान उपादेयता प्रदत्त करते हैं।

अर्थशास्त्र का वर्गीकरण

अर्थशास्त्र को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है: व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र।

व्यष्टि अर्थशास्त्र

व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत इकाइयों जैसे परिवारों, फर्मों या उद्योगों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन है। इसमें इस सिद्धांत का अध्ययन किया जाता है कि व्यावसायिक फर्में विभिन्न बाजार स्थितियों के तहत कैसे कार्य करती हैं तथा कैसे क्रेता व विक्रेताओं की संयुक्त क्रियाएं कीमतों का निर्धारण करती हैं।

© Study IQ Publications

समष्टि अर्थशास्त्र

यह अर्थव्यवस्था के समग्र रूप से संबंधित है। यह राष्ट्रीय आय, उत्पादन, मुद्रास्फीति, बेरोजगारी तथा करों जैसे योगों का अध्ययन है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र के मध्य अंतर

	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
कार्यक्षेत्र	व्यष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था के एक विशिष्ट बाजार उपभाग का अध्ययन है।	समष्टि अर्थशास्त्र संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन है, जिसमें विभिन्न प्रकार के बाजार क्षेत्र सम्मिलित हैं।
संबद्ध संक्षेत्र	मांग, आपूर्ति, कारक लागत निर्धारण, उत्पाद मूल्य निर्धारण, आर्थिक कल्याण, उत्पादन, उपभोग इत्यादि।	राष्ट्रीय आय, वितरण, रोजगार, सामान्य मूल्य स्तर, मौद्रिक इत्यादि।
अनुप्रयोग	यह व्यक्तिगत उपभोक्ताओं और उत्पादकों के अनुकूलन लक्ष्यों से संबंधित है।	यह संपूर्ण अर्थव्यवस्था की विकास प्रक्रिया के अनुकूलन से संबंधित है।
महत्व	यह अर्थव्यवस्था में उत्पाद की कीमतों के साथ-साथ उत्पादन के कारकों (श्रम, भूमि, उद्यमी, पूंजी, इत्यादि) के मूल्य निर्धारण हेतु उपयोगी है। इसे मूल्य सिद्धांत के रूप में जाना जाता है।	यह व्यापक मूल्य स्थिरता को बनाए रखता है तथा अपस्फीति, मुद्रास्फीति, बढ़ती कीमतों (प्रत्यवस्फीति), बेरोजगारी तथा सामान्य रूप से गरीबी जैसी महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौतियों का समाधान करता है। इसे आय सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र की अवधारणाएँ

माँग

मांग उन चीजों की मात्रा है, जो ग्राहक किसी विशेष अवधि के दौरान विभिन्न कीमतों पर क्रय करने को तैयार हैं।

मांग-निर्धारक

माँग के निर्धारक	विवरण
उत्पाद लागत	जैसे-जैसे वस्तु की कीमत परिवर्तित होती है, वैसे-वैसे उत्पाद की मांग भी परिवर्तित होती है।
उपभोक्ता आय	जैसे-जैसे उपभोक्ता आय बढ़ती है, वांछित वस्तुओं की संख्या भी बढ़ती जाती है।
संबद्ध वस्तुओं एवं सेवाओं की लागत	यदि एक वस्तु की कीमत बढ़ती है, तो पूरक वस्तु की मांग में कमी आती है।
अपेक्षाओं में परिवर्तन	भविष्य में कीमत बढ़ने की अपेक्षा से मांग में वृद्धि होती है।
बाजार में क्रेता	किसी वस्तु की मांग उसके क्रेताओं की मात्रा के आधार पर भिन्न होती है।

मांग-नियम

इस नियम के अनुसार किसी वस्तु की मांग की मात्रा कीमत में कमी के साथ बढ़ती है तथा कीमत में वृद्धि के साथ अनुबंधित है।

मांग की लोच

मांग की लोच कीमत में दिए गए परिवर्तन के कारण मांग की गई मात्रा में परिवर्तन की दर को इंगित करती है।

मांग की लोच के प्रकार

प्रकार	अर्थ
माँग की कीमत लोच	मांग की कीमत लोच, जिसे प्राय: मांग की लोच के रूप में जाना जाता है, इसकी कीमत में परिवर्तन हेतु उत्पाद की मांग की प्रभाव्यता व सुग्राहिता को संदर्भित करता है।
मांग की आय लोच	आय में परिवर्तन के कारण किसी उत्पाद की मांग में परिवर्तन की प्रभाव्यता की मात्रा को मांग की आय लोच के रूप में जाना जाता है।
मांग की तिर्यक लोच	मांग की तिर्यक लोच किसी वस्तु की कीमत में एक छोटे से परिवर्तन के परिणामस्वरूप एक वस्तु की मांग में प्रतिशत परिवर्तन को संदर्भित करता है।

© Study IQ Publications

प्रकार	अर्थ
मांग की विज्ञापन लोच	विज्ञापन या अन्य प्रचार व्ययों में परिवर्तन के कारण मांग में परिवर्तन की प्रभाव्यता को मांग की विज्ञापन लोच के रूप में जाना जाता है।

मांग-नियम के अपवाद

गिफेन वस्तुएँ: ये वस्तुएँ मांग वक्र का अनुपालन नहीं करती हैं। गिफेन वस्तुओं की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक यह है कि जैसे-जैसे कीमत बढ़ती है, आवश्यक माँग भी बढ़ती है।

उदाहरण के लिए: आयरिश आलू के अकाल के दौरान, आलू के दाम अपने सामान्य स्तर से आसमान छू रहे हैं। हालांकि, लोगों ने मांस जैसे अधिक महंगे खाद्य पदार्थों पर धन की बचत की तथा अपने आहार को बनाए रखते हुए अधिक आलू की खरीद की। यह आपूर्ति एवं मांग नियम के पूर्णरूपेण विपरीत मामला है।

वेब्लेन वस्तुएँ: इन विलासिता पूर्ण वस्तुओं की मांग उनकी कीमत या लागत बढ़ने के साथ बढ़ती है।

उदाहरण के लिए: एक रोलेक्स घड़ी या पोर्शे कार अपनी उच्च कीमत व संबद्ध प्रतिष्ठा प्रतीक के कारण वांछनीय है।

आपूर्ति

आपूर्ति एक उत्पाद की वह मात्रा है, जिसे कोई विक्रेता एक विशिष्ट मूल्य व एक निश्चित समय सीमा के अंदर बाजार में देने को तैयार है। मूल्य, उत्पादन की लागत, सरकारी नियम एवं प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न तत्वों का उत्पाद की उपलब्धता पर प्रभाव पड़ता है।

आपूर्ति-निर्धारक

प्रकार	विवरण
वस्तु की कीमत	अधिक कीमत, अधिक आपूर्ति।
उत्पादन की लागत	उत्पादन की लागत तथा वस्तु की आपूर्ति व्युत्क्रमानुपाती होती है।
कराधान नीतियां	यदि वस्तुओं पर कर की दरें अधिक हैं, तो इसके विपरीत वस्तुओं की आपूर्ति कम हो जाएगी।
उत्पादन तकनीकें	अप्रचलित उत्पादन तकनीकों/प्रक्रियाओं के कारण कम उत्पादन वस्तुओं की आपूर्ति को कम करता है, जो इसके विपरीत होता है।
कारक कीमतें और उनकी उपलब्धता	उत्पादन कारक, जैसे कच्चा माल, मशीनरी एवं उपकरण, तथा श्रम, सभी वस्तुओं के विनिर्माण में महत्वपूर्ण हैं।
संबंधित वस्तुओं की कीमत	वैकल्पिक व पूरक वस्तुओं की कीमतों का उत्पाद की आपूर्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

आपूर्ति-नियम

यह किसी वस्तु की कीमत तथा उस वस्तु की आपूर्ति के मध्य सकारात्मक संबंध की व्याख्या करता है। उदाहरण के लिए, यदि वस्त्र की कीमत बढ़ती है, तो वस्त्र की आपूर्ति भी बढ़ेगी।

आपूर्ति की लोच

आपूर्ति की लोच किसी वस्तु की आपूर्ति तथा उसकी कीमत के मध्य मात्रात्मक संबंध स्थापित करती है।

आपूर्ति की लोच के प्रकार

प्रकार	विवरण
अपेक्षाकृत लोचदार आपूर्ति	किसी वस्तु की कीमत में एक प्रतिशत परिवर्तन से वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में एक प्रतिशत से अधिक परिवर्तन हो जाता है।
एकात्मक लोचदार आपूर्ति	किसी वस्तु की कीमत में एक प्रतिशत परिवर्तन वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में समान (एक प्रतिशत) परिवर्तन का कारण बनता है।
अपेक्षाकृत बेलोचदार आपूर्ति	किसी वस्तु की कीमत में एक प्रतिशत परिवर्तन से वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में एक प्रतिशत से भी कम परिवर्तन होता है
पूर्णरूपेण बेलोचदार आपूर्ति	किसी वस्तु की कीमत में एक प्रतिशत परिवर्तन से वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
पूर्णरूपेण लोचदार आपूर्ति	किसी वस्तु की कीमत में एक प्रतिशत परिवर्तन वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में अनंत परिवर्तन का कारण बनता है।

© Study IQ Publications